संथाल समुदाय के आर्थिक स्थिति एंव वित्तीय चुनौतियों का ऐतिहासिक विश्लेषण

A Historical Analysis of the Economic Situation and Financial Challenges of the Santhal Community.

(झारखंड राज्य के गोड्डा जिला के विशेष संदर्भ में)

(With special reference to Godda District of Jharkhand State)

Dr. Sandeep Kumar Mandal

Sandipkumarmandal10@gmail.com

Head,Department of History, Degree College Mahagama Godda, Jharkhand 814154

प्रस्तावना:- झारखंड राज्य में संथाल जनजाति की आर्थिक स्थिति वर्षों से कमजोरी रही है। वित्तीय स्थिति चुनौतियों से भी प्रभावित होती रही है। जिसका आरंभ ब्रिटिश राज्य से ही हुई थी, जिसके कारण थे इस जनजातीय समुदाय का जमीनों को छिनना, महाजनों द्वारा अधिक ब्याज पर ऋण देना, बंधुआ मजदूरी जैसे कार्य को करवाना जैसे इन समस्याओं से संथाली समुदाय ग्रसित थे। इनके पास तरह-तरह के अनेकों ऐसी समस्याएँ थी जिसके कारण संथाली लोग अपने आप को विकसित नहीं कर पाए। उनके पास आज भी गरीबी, भुखमरी, शिक्षा का भाव, बेरोजगारी जैसे अनेकों समस्याएं है। उनकी समस्या इतना है कि यह लोग अपने जीवन अभावग्रस्त मे ही जीते हैं। हालांकि आजाद भारत के बाद उनकी स्थिति में कुछ सुधार जरूर हुआ है फिर भी उनकी जीवन चुनौतियों से भरा है। ऐसे ही महागामा प्रखंड के जमायडीह पंचायत के चनायचक गांव के अधिकांश परिवार के लोग गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी जैसी अनेक समस्याओं से ग्रसित है। यहाँ के संथाली समाज के लोगों को कहना था कि यह क्षेत्र पिछड़ा क्षेत्र के अंतर्गत आता है। जहां पर मूलभूत सुख सुविधाओं का भी अभाव है। यहां तक की आर्थिक स्थिति के अभाव में अधिकांश परिवार के लोग प्राथमिक शिक्षा के बाद उच्च शिक्षा नहीं ग्रहण कर पाते हैं, जिसका मुख्य कारण आर्थिक समस्याएं हैं। यह लोगों की वित्तीय स्थिति कमजोर होने के वजह से अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। स्थिति यह है कि लोग अभावग्रस्त जीवन यापन कर रहे हैं तथा अपनी आधारभूत आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं।

कुंजी शब्द :- जनजाति, आर्थिक समस्या, बेरोजगारी, शिक्षा का अभाव, और गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन

चनायचक गाँव के लोगों के पास आर्थिक संबंधी समस्या अनेक है। रोजगार अपने क्षेत्र के अंतर्गत नहीं मिलता है जिसके कारण लोग अपने प्रदेश से बाहर किसी दूसरे प्रदेश में कुछ लोग रोजी-रोटी कमाने के लिए जाते हैं। लेकिन अधिकांश यह गांव के संथाली समाज के लोग गाय, बकरी, मुर्गी, सुअर जैसे अनेक जानवरों को पालते हैं ताकि उन्हें समय पर कुछ आय प्राप्त हो सके। लेकिन इस आधुनिकता में उनकी इतनी पर्याप्त आय नहीं होती है कि वह अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। यदि संथाली समाज के जमीनी स्तर पर नजर डालें तो पता चलता है कि यहां के अधिकांश परिवार गरीबी रेखा से नीचे अपना जीवन यापन कर रहे हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जिनकी स्थिति में कुछ सुधार हुआ है लेकिन वह भी खुद को विकसित नहीं कर पाए है।

साहित्य पुनरावलोकन:-

भारत में आदिवासी सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं। इनकी आबादी देश के कुल जनसंख्या का 8.61% है। अनुसूचित जनजाति की आधी से अधिक आबादी मध्य प्रदेश, झारखंड ,छत्तीसगढ़, और उड़ीसा में रहती है। आदिवासी समुदाय अपनी आजीविका के लिए जंगलों, नदियों और जमीन पर निर्भर रहते हैं। इन्हें समाज में अनेक समस्याओं का सामना

करना पड़ता है। इन समस्याओं में अधिकांश अशिक्षा, आर्थिक असंतुलन, एंव राजनीतिक समस्याएं आदि प्रमुख है (**R, 2025**)। अधिकांश जनजाति आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं। इसी के साथ भिन्नताओं के साथ भौगोलिक अलगाव वाले भी हैं, जिन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जनजाति समाज में अनेक सामाजिक समस्याएं हैं, जिन्हें वैज्ञानिक जांच और मूल्य द्वारा मानव कल्याण के लिए हानिकारक माना जाता है। इसी के साथ-साथ गरीबी आदिवासीयों का सबसे प्रमुख बीमारी है। इस समस्या के पीछे अनेक कारण हैं। अधिकांश जनजाति गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही हैं**(Girase, 2016)**। भारत सहित अधिकांश देशों में जनजातीय समुदाय की स्थिति अत्यंत दयनीय है। वे अपने बुनियादी जरूरत को भी पूरा नहीं कर पाते हैं, जैसे भोजन, उचित कपड़ा और पर्याप्त आश्रय भी पूरा नहीं कर पाते हैं। यह जनजातियों की हालात इतने खराब है कि वह अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में नामांकन भी नहीं कर पाते हैं। वह अपने बच्चों को पढ़ाई की जगह मजदूरी कार्य में लगा देते हैं ताकि वह अपनी आजीविका के लिए कुछ पैसा कमा सकें(**Vinu, 2021**)।

जनजातीय समुदाय की समस्याएं बहु आयामी है उनके सामने गरीबी और अशिक्षा बेरोजगारी जैसे अनेक समस्याएं व्याप्त है। इनके बीच गरीबी एक सबसे बड़ा मुद्दा है जिसका प्रभाव जनजातीय समुदाय पर बड़े पैमाने पर देखा गया है। यह भोले-भाले जनजाति अपनी गरीबी के कारण अनेक अवसरों से वंचित रह जाते हैं(**Basumatary, 2020**)। आदिवासी समुदाय में गरीबी, दुख, जरूरतमंद चीजों का अभाव जैसे अनेक चीजों का सिलसिला अभी भी जारी है। यह समाज के लोग गैर सरकारी संगठनों के साथ कार्य करके अपना जीवन यापन करते हैं। अनेक सरकारी संगठनों आदिवासियों के उत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं। फिर भी उनकी स्थिति अभी भी दयनीय है, क्योंकि यह समाज के लोग अब भी सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक आधार पर पिछड़े हुए हैं(**Ballabh & Batra, 2015**)। भारत में आदिवासी समुदाय लंबे समय से समाज के हाशिए पर रहे हैं। यह लोग अनेक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इनकी अच्छी शिक्षा तक पहुंच बहुत कम है। सामाजिक, आर्थिक तरक्की बहुत धीमी गति से हो रहा है। यह समाज में पढ़ाई-लिखाई की कमी आम बात है, जिसके कारण गरीबी का चक्र बना रहता है(**Sinha & Sharma, 2024**)। अनुसूचित जनजाति शिक्षा के मामले में काफी पिछड़ी हुई है। क्योंकि वह समाज के मुख्य धारा में नहीं रहते हैं। इसलिए उन्हें कई तरह के सुविधा नहीं मिलता है, और अनेक सुविधा से वंचित रह जाते हैं। यह जनजातीय समाज के आर्थिक रूप से पिछड़े होने के अनेक कारण हैं, उनमें से नौकरी, पेशा लोगों की संख्या बहुत कम है। यह लोग अधिकांश पारंपरिक तरीके से खेती पर निर्भर हैं। इसके अलावा उनमें फैमिली प्लानिंग की कमी के कारण उनका कुल खर्च उनके आय के हिसाब से नहीं है। इन लोगों का शराबी लाइफस्टाइल, एक बड़ी समस्या है। यह पैसा का नुकसान का भी एक कारण है(**Mahali & Bhattacharyya, 2023**)। अनुसूचित जनजाति भारतीय समाज के अनेक लोगों के हाशिए पर में से ये लोग भी है। अभी भी शैक्षणिक आधार पर काफी पीछे हैं तथा समाज की मुख्य धारा से पूरी तरह से अलग है। केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार के शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कोशिश करने के बावजूद भी इन लोग की अनेक समाज के तुलना में इनका शिक्षा का स्तर भी बहुत कम है। आदिवासियों के शिक्षा को बेहतर बनाना बहुत जरूरी है, ताकि उनकी आर्थिक स्थिति एवं सामाजिक स्थिति को सुधारा जाए(**Venkateswarlu & Kumar, 2023**)। आदिवासियों का आर्थिक जीवन सामान्यत: वन एवं प्राकृतिक पर्यावरण से घनिष्ठ संबंधित होता है भारत में आदिवासी समाज के लोग अनेक अर्थव्यवस्था से संबंधित है आदिवासी समाज में महिलाएं भी पुरुषों के साथ-साथ अनेक

अर्थव्यवस्था में अपना योगदान करती है। उत्पादन प्रक्रिया में आदिवासी महिलाओं को बहुत बड़ा जिम्मेदारी होता है और महिलाएं पुरुष के अपेक्षा अधिक कार्य करती है। घर के कार्य से लेकर बच्चों के पालन पोषण तक इनकी जिम्मेदारी हमेशा बनी रहती है। लेकिन परिवार में

आय कम होने के वजह से उन्हें अभावग्रस्त जीवन जीना पड़ता है(**Pappala, 2020**)। भारतीय आदिवासी समाज में महिलाओं की स्थिति उस समाज के न्याय, आय, शिक्षा, रोजगार आदि के आधार पर पता चलता है। आर्थिक विकास वहां के लोगों को जीवन स्तर से अच्छी तरह दिखता है। आर्थिक विकास का मुद्दा उनके प्रमुख समस्याओं में से एक है। क्योंकि उनका आर्थिक

स्थिति आज भी दयनीय है। सरकार द्वारा समय-समय पर उनके विकास के अनेक प्रयास किए जाते हैं फिर भी स्थिति दयनीय है(**Chirange, 2023**)।

शोध अंतराल :-

झारखंड राज्य मे संथाल परगना संथाल बाहुल क्षेत्र है। इस क्षेत्र में अधिकांश संथाली जनजाति के लोग निवास करते हैं। कुछ संथाली जनजाति के ऐसे लोग हैं जिनका विकास तो बड़े पैमाने पर हुआ है, फिर भी यह संथाली जनजाति समुदाय के अधिकांश लोगों का विकास लगभग नहीं के बराबर हुआ है। क्योंकि यह संथाली जनजाति के लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर पा रहे हैं। शैक्षणिक, आर्थिक आदि के आधार पर काफी पिछड़े हुए हैं। इसलिए यह जनजाति पर शोध कार्य पूर्ण करने के लिए यह विषय का चुनाव किया गया है। ताकि संथाली जनजाति समुदाय के वर्तमान में जो आर्थिक समस्या और वित्तीय चुनौतियां हैं, उसको उजागर किया जा सके।

संथाली जनजाति की समस्या:-

संथाली जनजाति समुदाय को पहले उच्च ब्याज दर पर ऋण लेना पड़ता था। जिसके कारण उनके कर्ज का चक्र हमेशा चलता रहता था। वे अपनी समस्याओं से अब भी उबर नहीं पाए हैं। रोजगार की कमी इनकी एक बड़ी समस्या है, क्योंकि उनके क्षेत्र में इनको सही समय पर किसी भी प्रकार का मजदूरी कार्य भी नहीं मिलता है। सिर्फ समय के अनुसार ही उन्हे कृषि कार्य से संबंधित कार्य मिलता है। इसके बाद उन्हें बेरोजगारी की समस्या का हमेशा

सामना करना पड़ता है। संथाली समुदाय के लोग आज भी गरीबी, भुखमरी और अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे है, भले ही इस समुदाय के कुछ लोगों का विकास हो गया हो, लेकिन अभी भी एक बड़ा तबका गरीबी की चपेट में है। सरकार जनजाति समुदाय के लिए समय-समय पर योजना भी लाती है, लेकिन वह योजना इनके पास आते-आते खत्म हो जाती है। जिसके कारण इनके समस्या का चक्र हमेशा बना रहता है। अधिकांश जनजाति पुरुष का कहना था की हमें किसी भी प्रकार का सरकारी लाभ नहीं मिलता है, हम स्वयं किसी तरह अभाव मे अपना जीवन यापन करते हैं।

शोध के उद्देश्य :- संथाल जनजाति की आर्थिक स्थिति एवं उनके समस्या को समझना।

आंकड़े संकलन की विधी :-

यह शोध संथाल जनजाति समुदाय पर आधारित है। इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक शोध प्रविधियां का उपयोग करके तथ्यों का संकलन किया गया है। गुणात्मक शोध प्रवृत्ति के अंतर्गत संथाल जनजाति समुदाय के उनके व्यवहार, कारणों, व्यक्तिक लेखो, साक्षात्कारों तथा सहभागी प्रेषण विधियों का प्रयोग करके तथ्य का संकलन किया गया है। जबकि मात्रात्मक शोध प्रविधि के अंतर्गत सर्वेक्षण, इंटरव्यू अवलोकन, रिकॉर्ड और रिपोर्ट के रिव्यू के माध्यम से वास्तविक तथ्य का संकलन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र झारखंड राज्य के गोड्डा जिला के महागामा प्रखंड के जमायडीह पंचायत के चनायचक गांव के 15 से ऊपर आयु वर्ग के 42 पुरुषों का साक्षात्कार कर उनकी आर्थिक एवं अनेक समस्याओं से संबंधित तथ्यों का संकलन किया गया है। यह गाँव मे 38 घर है जिसकी कुल जनसंख्या 250 है।

संरचित साक्षात्कार अनुसूची :-

संथाली जनजाति समुदाय के समस्याओं से संबंधित तथ्यों का संग्रहण करने के लिए संरक्षित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। यह शोध प्रविधि के अंतर्गत संथाली जनजाति की क्या आर्थिक समस्या है, बेरोजगारी कैसे बढ़ रहा है तथा

उनको शिक्षा प्राप्त करने में क्या-क्या समस्या आ रहा है। उनके जीवन यापन में कौन-कौन सी बधाएँ आ रही है आदि से संबंधित तथ्य को प्राप्त किया गया है। साक्षात्कार लेते वक्त उनकी अनेक गतिविधियों पर ध्यान को आकर्षित किया गया है, ताकि यह शोध को वैज्ञानिक रूप प्रदान किया जा सके।

विश्लेषण :-

झारखंड राज्य के गोड्डा जिला के महागामा प्रखंड के जमायडीह ग्राम पंचायत के चनायचक गांव के अंतर्गत आने वाले संथाली जनजातियों के उनकी मुख्य समस्याओं से संबंधित तथ्य को प्राप्त किया गया तब पता चला कि यह जनजाति के पास अनेक समस्याएं हैं। क्योंकि यह संथाल परगना में संथाल जनजातियों की बहुलता है, यहां कुछ जनजाति अपने विकास के शिखर को छू चुके हैं वही एक बहुत बड़ी आबादी आज भी विकास की मुख्य धारा से वंचित है। यहां की संथाल जनजाति का कहना था कि हमारे आस-पास किसी प्रकार के भी मजदूरी के कार्य नहीं मिलता है। क्योंकि यहां न तो कोई खदान है और न कोई वैसा क्षेत्र है जहां प्रतिदिन मुझे मजदूरी संबंधी कार्य मिले, इसलिए मजदूरी कार्य करने के लिए दूसरे राज्य में जाना पड़ता है। इसी के साथ-साथ यह गांव अत्यंत पिछड़े हुए क्षेत्र में आता है। जहां के लोग अभी भी पारंपरिक तरीका से अपना जीवन यापन कर रहे हैं। यहां के अधिकांश लोगों का घर कच्चा-पक्का दोनों प्रकार का है, यदि पक्का का मकान है तो उसके ऊपर छत का ढलाई नहीं हुआ है। ऐसी स्थिति में लोगों के पास मकान का भी अभाव है। यह गांव में कोई भी संथाल जनजाति के लोग सरकारी नौकरी नहीं करते हैं बल्कि किसी प्रकार मेहनत मजदूरी करके अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

शोध का महत्व :-

1 संथाल जनजाति समाज के बेरोजगारी तथा अनेक समस्याओं पर विचार करने की आवश्यकता है।

2 संथाल जनजाति समुदाय को उनकी स्थिति सुधारने के लिए शिक्षा और रोजगार को प्रोत्साहन किया जाए ताकि उनकी स्थिति में सुधार हो।

3 संथाल जनजाति समुदाय में वित्तीय समस्या एक प्रमुख समस्या है, यह समस्या को कैसे कम किया जाए इस पर पूर्ण विचार करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष :-

संथाल जनजाति लोगों के पास आर्थिक और वित्तीय से संबंधित अनेक समस्याएँ है। संथाल लोगों से जब तथ्य प्राप्त किया गया तो पता चला कि यहां की अधिकांश लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करते हैं। ये लोग मुख्यतः बकरी, मुर्गी, सुअर जैसे अनेक जानवरों का पालन करते हैं। इन्हीं से उनको कुछ आय प्राप्त हो जाता है। उनके घर के नजदीक उन्हे किसी प्रकार के मजदूरी का कार्य नहीं मिलता है। यदि इन्हें मजदूरी का कार्य करना हो तो इन्हें अपने घर से बाहर पांच या 10 किलो मीटर की दूरी का सफर करना होता है और वह कार्य भी प्रतिदिन नहीं मिलता है, जिसके कारण ये लोग अभावग्रस्त जीवन यापन कर रहे हैं। कुछ संथाली पुरुषों का कहना था कि हमारे पास इतना आमदनी नहीं है कि हम अपने बच्चों को उचित शिक्षा और उचित इलाज दे सकें। स्थिति यह है कि अधिकांश घर के लोग अपनी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते। हालांकि संथाल परगना क्षेत्र में कुछ संथाल जनजाति लोगों के स्थिति में काफी अच्छा सुधार हुआ है, लेकिन अभी भी एक बड़ी आबादी जो शहर से कटे हुए हैं, वह खुद को विकसित नहीं कर पाए हैं और उनका जीवन भी पारंपरिक तरीके से ही चल रहा है। स्थिति यह है कि लोग अपने बातों को खुलकर रखने में भी शर्मिंदगी महसूस कर रहे थे। उनका कहना था की विद्यालय भी बहुत दूर है, जहां अपने बच्चों के नामांकन के लिए सोचना पड़ता है, यदि सोच भी लिया कि नामांकन कराएंगे तो आर्थिक समस्या सामने आ जाती है, जिसके कारण नाबालिक उम्र में ही अपने बच्चों को काम में लगा देते हैं। ताकि उन्हें कुछ आय प्राप्त हो जाए और परिवार का भरण-पोषण हो। अधिकांश परिवार ऐसा है जो खाद्य-पदार्थों का भी अभाव महसूस करता है, लोगों का कहना

था की सभी घर में सरकारी राशन मिलता है जो एक बहुत बड़ा सहायता है, इसके बावजूद भी खाद्य पदार्थ की कमी की समस्या बनी रहती है।

संदर्भ सूची :-

- R, Shafren. (2025) Problems of Tribal People Community. *International Journal for Research Trends and Innovation.* 10 (2). 232-236. Retrieved from. https://www.ijrti.org/papers/IJRTI2502026.pdf
- Girase, Swati. (2016), The Problems of Indian Tribal Communities in Current Scinario. *International Journal of Development Research.* 6 (5). 7925-7927. Retrieved from. https://www.journalijdr.com/sites/default/files/issue-pdf/5356.pdf
- Pappala, Appala,. Naidu (2020). Tribal Women and Economic Significance: A Comprehensive Study. *International Journal of Research and Review*. 7 (11). 68-72. Retrieved from. https://www.ijrrjournal.com/IJRR_Vol.7_Issue.11_Nov2020/IJRR0012.pdf
- Vinu, (2021).Tribal education and quality of life: issues & challenges. *The International Journal of Indian Psychology*. 9 (1). 604-609. DOI: 10.25215/0901.060
- Basumatary, Monjita. (2020). Issue, Challenge and Development Problems in Socio, Economic and Culture of Tribal People in Assam. *International Journal of Recent Technology and Engineering* 8 (5). 5222-5223. Retrieved from https://www.ijrte.org/wp-content/uploads/papers/v8i5/D9226118419.pdf
- *Venkateswarlu*, V. & Kumar, V., Naveen (2023). Tribal Education - A Key Factor for Social Inclusion An Exploratory Study of Scheduled Tribes. *We the People DSNLU Journal of Social Sciences*. 1 (1). 187-195. Retrieved from https://dsnlu.ac.in/storage/2023/02/15-Tribal-Education-A-Key-Factor-for-Social-Inclusion-An-Exploratory-Study-of-Scheduled-Tribes.pdf
- Ballabh, V. & Batra. P. (2015). Socio-Economic Transformation of the Tribals in Central India: Lessons and Experiences. *Indian Journal of Agricultural Economics*.70 (3) . 273-280. Retrieved from https://isaeindia.org/wp-content/uploads/2020/11/05-Article-Vishwa-Ballabh.pdf
- Mahali, D. & Bhattacharyya, D. (2023). Socio-economic status & problems of scheduled tribe community in West Bengal : An overview. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research*. 10 (1) 581-584. Retrieved from https://www.jetir.org/papers/JETIR2301179.pdf
- Chirange, D., B. (2023). Economic Development of Tribal Women in India. International Journal for Multidisciplinary Research. 10 (1).1-3 Retrieved from https://www.ijfmr.com/special-issues/2/99.pdf
- Sinha, M., K. & Sharma, Y., P. (2024). Effect of Socio-Economic Status and Barriers of Tribal Educations at Secondary Level in Lakhisarai District. *International journal of innovative research in Technology.*11 (7). 218-223. Retrieved from https://ijirt.org/publishedpaper/IJIRT170352_PAPER.pdf